त्रिपुर श्रीं साधना

श्री विद्या साधना विशिष्ट रूप से त्रिपूर सुन्दरी की ही साधना है, इन्हीं की संज्ञा षोडशी एवं ललिता भी यही शक्ति हैं।

वास्तव में ये सभी माँ जगदम्बा के ही रूप है, किन्तु जीवन में विभिन्न स्थितियों के साथ-साथ उनका स्वरूप भी बदलता रहता है। **देवी के किसी विशिष्ट रूप की साधना करने पर तदनुकूल ढंग से लाभ भी विशिष्ट रूप में मिलता है। जहां माँ भगवती जगदम्बा की साधना मूलत: भावना-प्रधान है वहीं षोडशी त्रिपुर सुन्दरी एवं ललिताम्बा की साधना तांत्रोक्त है।**

जीवन में प्रत्येक व्यक्ति चाहे वह किसी भी **व्यवसाय या नौकरी से सम्बन्धित हो, राज्यपक्ष** से कार्य पड़ता ही है। उनसे मधुर संबंध होने पर समाज में उसका सम्मान भी बढ़ जाता है, साथ ही अनावश्यक तनावों एवं बाधाओं से भी बचता है।

इस हेतु **सर्वार्थ साधिनी त्रिपुर श्रीं की साधना** करने का विधान शास्त्रों में मिलता है जिसकी कृपा फलस्वरूप से राज्याधिकारी भी अनुकूल व हित चिन्तक हो जाते हैं। साधक **अपने समक्ष एक लाल रंग के वस्त्र पर अक्षत की ढेरी बनाकर उस पर श्री चक्र यंत्र स्थापित कर उसका संक्षिप्त पूजन सम्पन्न करें।** इसके पश्चात् **लघु नारियल** को लेकर उसे पूरी तरह से केसर से रंग दें तथा यंत्र के समक्ष चावलों की ढेरी पर स्थापित कर **पुष्प की पंखुड़ियों से तथा घी के दीपक से पूजन कर श्री माला से निम्न मंत्र की एक माला जप सम्पन्न करें-**

मंत्र

॥ ॐ क्लीं श्रीं ह्रीं त्रिपूर सुन्दरि सर्व जगत् मम वशमानय राजयोग कुरू कुरू मह्यं बलं देहि नमः॥

मंत्र जप के उपरान्त लघु नारियल को किसी लाल वस्त्र में बांधकर किसी पवित्र स्थान में रख दें। ऐसा करने से निरन्तर जीवन में श्रीं युक्त व्यापार व राज्य पक्ष में मान सम्मान व समाज में ख्याति में वृद्धि होती है।

न्यौछावर ₹ 950

सर्व दुःख नाशिनी श्री विद्या दीक्षा

श्री विद्या महाविद्या ब्रह्ममयी है। श्री स्वयं ही ललिता, त्रिपुरसुन्दरी, त्रिपुरवासिनी, त्रिपुरमालिनी, त्रिपुरेशी,त्रिपुरा सिद्धा, त्रिपुराक्षी, त्रिपुर भेदनी एवं त्रिपुराम्बा है। जो दस महाविद्या में प्रथम तीन काली, तारा एवं षोड़शी है, ये शक्तियां मनुष्य के सम्पूर्ण जीवन से पूर्ण तादात्मय रखती है। जब साधक इन शक्ति स्वरूपों को समाहित करने में सफल हो जाता है, तो उसे जीवन की पूर्णता मिल जाती है।

शंकराचार्य के चारों पीठों में आदिकाल से श्री यंत्र एवं श्रीविद्या की अनवरत् रूप में उपासना चली आ रही है, क्योंकि आद्य शंकराचार्य शैव होते हुये भी भगवती महात्रिपुरसुन्दरी के परमोपासक थे। हयग्रीव, अगस्त्य, दत्तात्रेय, दुर्वाशा, परशुराम आदि ने श्रीविद्या की साधना दीक्षा की क्रिया अपने जीवन में सम्पन्न की जिससे जीवन में उन्होंने भोग और मोक्ष दोनों ही सोपानो को प्राप्त किया।

श्री विद्या एकमात्र विद्या है, जिसके नौ स्वरूपों में ही समस्त कामनाओं की पूर्ति का मंत्र निहित है। **सर्व प्रथम तनावमुक्त जीवन, प्रत्येक मनोकामना की पूर्ति, जीवन के रोग-शोक का शमन, शत्रु बाधा से मुक्ति, राज्य पक्ष से अनुकूलता एवं सम्मान, जीवन में पूर्ण भाग्योदय, आर्थिक सुदृढ़ता प्रत्येक अनिष्ट का शमन, पूर्ण गृहस्थ सुख एवं प्रभावशाली व्यक्तित्व भौतिक रूप से मानव जीवन की प्रथम आवश्यकता है।** श्री विद्या पूर्ण रूप **सर्व दु:ख नशिनी श्री विद्या दीक्षा** से साधक जीवन की अनेक समस्याओं से निवृत्त हो जाता है।

फोटो दीक्षा न्यौछावर ₹ 1800